**मंथन के मोती - 8**

**गीत प्रतियोगिता - पति-पत्नी का रिश्ता, वर्तमान के सन्दर्भ में.....**

**अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन** के अंतर्गत **राष्ट्रीय सुलेखा समिति** की **अष्टम प्रतियोगिता - पति-पत्नी का रिश्ता, वर्तमान के सन्दर्भ में.....** अक्टूबर 2018 में प्रारम्भ होकर दिसंबर 2018 में समाप्त हुई | **25 प्रदेशों की 70 रचनाओं** के साथ भागीदारी रही | पूर्व की परिपाटी पर चलते हुए सभी प्रदेशों ने सुलेखा समिति की समय की प्रतिबध्दता का पूर्ण रूपेण पालन किया, उसी कारण प्रतियोगिता अपने निश्चित समय पर समाप्त हुई | समिति ने सदैव महिलाओं की सोच, उनकी समस्याओं और उसके निवारण की ओर ध्यान दिया है | समाजोपयोगी उन विषयों को उठाया है जो महिलाओं के मर्म को स्पर्श करते हैं | हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से रोचक तरीके द्वारा प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं | गीत लेखन विधा यद्यपि किंचित कठिन होती है पर लेखिकाओं ने उसे सहज भाव से अपनाया और यही उत्साह पूर्ण भाव हर बार हमें कुछ नया परोसने का सम्बल देता है |

इस बार भी लेखन में काफी विविधता है | पति-पत्नी के रिश्ते में जो समन्वय होना चाहिए, वैचारिक एकता होनी चाहिए, उस पर सभी ने एक मत से लिखा | आज से बीस वर्ष पूर्व स्त्री घर संभाले और पति बाहर काम कर पैसा लाये एवं घर के कार्यों में कोई सहयोग न करे, इस विचार धारा से लगभग सभी ने परहेज किया | " मैं खाना बनाऊ तुम टेबल सजाओ, मैं बच्चों को पढ़ाऊँ तुम उनके प्रोजेक्ट बनाओ " आदि विचार पढ़ने को मिले, जिनसे यह परिलक्षित होता है कि आज कि नारी यह मानने लगी है कि गृहस्थी की गाड़ी को सुचारु रूप से चलाने के लिए दोनों पहिए बराबर होकर समानांतर रूप से चलें | आपसी नोंक झोंक, हलकी-फुलकी तकरार, कभी-कभी गंभीर बात पर तलाक की सोच, पर फिर एक दूसरे के बिना न रह सकने की भावना या बच्चों के कारण जुड़े रहने की बातें, इन सभी पर गीतों में भरपूर रौशनी डाली गयी है | आज के जीवन में अपरिहार्य बन चुकी मोबाइल संस्कृति को भी गीतों में पिरोया गया है | कई गीतों में शिष्ट हास्य की झलक भी थी | शॉपिंग, पिक्चर, पर्यटन सभी के प्रति नारी सुलभ भाव से पुरुष से आग्रह को दर्शाया गया | कुल मिलाकर निर्णायक मंडल के लिए फिल्मों के गीत गा-गा कर रचनाओं पर निर्णय लेना एक बेहद दिलचस्प अनुभव था |

इस बार गीत में शब्दों का बंधन न होने से शब्द सीमा की कोई समस्या तो नहीं थी पर कुछ ने केवल तीन अंतरे लिखे जबकि नियमानुसार चार अंतरे लिखने थे एवं कई प्रस्तुतियों में शहर और प्रदेश के नाम भी नहीं थे | हम लेखिका समूह और प्रदेश पदाधिकारी गण से विनम्र आग्रह करते हैं कि सभी नियमों का दृढ़ता से पालन करें | कुछ ने केवल दीपावली की साफ़ सफाई में पति के सहयोग की बात लिखी तो कुछ के बोलों और धुन में तारतम्य नहीं था जिनके चलते रचनाएं प्रतियोगिता से बाहर हुईं | प्रतियोगिता श्रंखला अब अपने आठ सोपान पार कर चुकी है, हम लेखिकाओं से उन्नत भाषा की अपेक्षा करते हैं जिसका कई

रचनाओं में नितांत अभाव था | भाषा की उत्कृष्टता, मुहावरे, लोकोक्तियों युक्त सुन्दर लालित्यमय शब्दों का प्रयोग रचना को वरीयता दिलाता है और लेखिका को शिखर छूने को उन्मुख करता है | सीधी सपाट भाषा कई बार रचना को भाव हीन कर देती है | कृपया भाषा के सौंदर्य पर विशेष ध्यान दीजिये | वैसे भी सुलेखा समिति का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा को समाज में जन जन तक पहुंचना है और आने वाली पीढ़ी को हिंदी की उपयोगिता एवं महत्ता समझाने के लिए मातृ शक्ति को ही प्रयास करना होगा |

सुलेखा समिति राष्ट्रीय नेतृत्व के प्रति आभार प्रकट करती है | समिति की कार्य प्रणाली के प्रति उनका दृढ़ विश्वास प्रतियोगिताओं को नए आयाम दे रहा है | सुलेखा के कार्यों को जन जन तक पहुंचाने में प्रदेशों के पदाधिकारी गण का भी बहुत बड़ा सहयोग है जिसकी हम सराहना करते हैं | लेखिका मंडल का विशेष धन्यवाद जिनकी लेखनी शिखर की ओर अनवरत बढ़ रही है | हम कह सकते हैं कि निर्णायक मंडल और लेखिका समूह के बीच एक अनदेखे सेतु का निर्माण हुआ है क्यों कि जब रचना उत्तम होती है और लेखिका पुरस्कृत होती है तो भाव विभोर और गर्वित निर्णायक होते हैं | कुल मिलाकर सुलेखा एक खूबसूरत रिश्ते का निर्माण कर रही है | अंत में हमारे निर्णायक मंडल का भी धन्यवाद जिनकी तत्परता व सहयोग के कारण प्रतियोगिता यथा समय, भली भांति संपन्न होती हैं |

धन्यवाद

**मंजू मानधना, दिल्ली**
**सुलेखा समिति प्रभारी**